धूमिल के काव्य में मानवतावादी स्वर

डॉ. रज़िया शहेनाज़ शेख अब्दुल्ला

सारांश :

धूमिल की कविताओं में सर्वहारा वर्ग के प्रति संवेदना और इस पक्ष के लिए आवाज उठाई गई है। बड़ी ही निर्भयता से शोषण प्रवृत्ति का विरोध किया तथा आम जनता जो किसान, मजदूर, श्रमिक, उपेक्षित जन जिनका शोषण सदियों से होता रहा है, उस वर्ग के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए उनकी वेदना को वाणी दी है। तथा काव्य के आधार पर जनशक्ति को बढ़ाने की बात करते है। शोषित वर्ग पूँजीवादी तथा राजनेताओं का परदाफाश करते नज़र आते है। हिंसा का विरोध करते हुए अहिंसा का, मानवतावाद का संदेश देते है। धूमिल की कविताओं में जिन मुद्दों को लेकर मानवतावादी स्वर उभरा है, उस विषय में हम यह कह सकते है कि उनकी कविता आम जनता के पक्ष में खड़ी होकर व्यवस्था के अमानवीय चेहरे को प्रस्तुत कर उसे सामने लाना चाहती है। उनकी कविताएँ मानवीय-मूल्यों की गहराई तक पहुँचकर उसे स्थापित करना चाहती है।

पार्श्वभूमि:

मानवतावाद मनुष्य में निहित उदात्त प्रवृत्तिपरक मानवता को विषद करनेवाली एक चिंतन प्रणाली है। यह प्रणाली एक व्यक्ति से समाज तक विस्तारित होती रहती है। यह मनुष्य के बीच में विविध भाओं-गुणों-संवदेनाओं और व्यवहारों में विद्यमान रहती हैं। यह केवल मानव-मानव के बीच संवेदनात्मक दृष्टि का निर्माण ही नहीं करती अपितु मानवेत्तर प्राणियों के प्रति भी संवेदनात्मक दृष्टि अपनाकर मानवेत्तर प्राणियों के बीच भी परस्पर प्रेम की निर्मिती कर लौकिक जगत में आत्मा के एकत्व की अनुभूति करा देती है। यही अनुभूति हमें 'धूमील' की कविताओं में देखने को मिलती हैं, जो मानवतावादी स्वर के रूप में उभर कर सामने आती है और समस्त विश्व में मानवतावद का संदेश देती है।

मानवतावाद का अर्थ :

'मानवतावाद' (ह्युमनिज्म) शब्द के अनेक अर्थ हैं। 1806 के आसपास जर्मन स्कूलों द्वारा पेश किये गए पारंपरिक पाठ्यक्रमों की व्याख्या के लिए ह्युमानिस्मस का प्रयोग किया गया था। सन 1836 में 'ह्युमनिजम' को इस अर्थ में अंग्रेजी को प्रदान किया गया था। सन 1856 में महान जर्मन इतिहासकार और भाषाविद जॉर्ज वोइट ने 'ह्युमनिज्म' का प्रयोग पुनर्जागरण संबंधी मानवतावाद की व्याख्या के लिए किया था, यह आन्दोलन पारंपरिक शिक्षा को पुनर्जीवित करने के लिए पुनर्जागरण के दौरान खूब फला-फूला। 'ह्युमनिस्ट' शब्द का ऐतिहासिक और साहित्यिक प्रयोग 15वी सदी के इतालवी शब्द 'युमनिस्ता' से निकला है जिसका अर्थ पारंपरिक ग्रीक और इतालवी साहित्य का एक शिक्षक या विद्वान और इसके पीछे का नैतिक दर्शन हैं। इंग्लिश

डिक्शनरी में 'ह्युमनिज्म' शब्द का इस्तेमाल सन 1812 में एक अंग्रेजी पादरी द्वारा उन लोगों के बारें में बताने के लिए दर्ज हैं जो ईसा मसीह (क्राइस्ट) 'सिर्फ मानवता' (ईश्वरी प्रकृति के विपरित) में विश्वास करते है अर्थात एकेश्वरवादी और प्रकृतिवादी है।

मानवतावाद की परिभाषा : मानवतावाद की भारतीय प्राचीन धर्मग्रंथों में की गई व्याख्याए निम्न रूप से देखी जा सकती है।

ऋग्वेद के एक मंत्र में कहा गया है –

"अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते
संभ्रातरा वावृधु: सौभगाय।
युवा पिता स्वसा रूद्र एषां सुदुसा
प्रशिन: सुदिना मरुद्भ्य:।" [1]

अर्थवेद में भी एक मंत्र आता है –

"सहृदय समानस्त्रमविद्वेष कुणोमि ब:
अन्योडन्यमभिहर्यत वत्स जातमिवाहन्य।" [2]

गीता में भी इस पर विस्तार से विचार किया गया है –

"सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मानि।
ईक्षते यांगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शन।" [3]

इन प्राचीन ग्रंथों में मानव-मात्र की मानवता को अभिव्यक्त किया गया है। यहीं विचार बौद्ध और जैन धर्म ग्रंथों में भी व्यक्त हुए हैं। मानवतावाद की व्याख्या आधुनिक कालीन भारतीय विचारकों ने दी है। जैसे की – श्री गुलाबराय ने मानवता के 10 उपकरणों का उल्लेख किया है, "जो क्रमश: सत्य, दूसरे के दृष्टिकोण को महत्व देना, अहिंसा, पर स्वाभिमान रक्षा, शिष्टता, सहिष्णुता, आत्मौपम्य दृष्टि, निर्बल पर बल प्रदर्शित न करना, अधिकार भावना का त्याग तथा परगुण-ग्राह्यता है।"[4] तो मानवतावाद की उत्तम व्याख्या करते हुए मा. गांधीजी ने कहा है, "मैं ईश्वर की और इसलिए मानवता की भी निरपेक्ष एकता में विश्वास करता हूँ। यद्यपि हमारे शरीर अनेक हैं, परंतु हमारी आत्मा एक है। मैं अद्वैत में विश्वास करता हूँ। मैं मनुष्य की और इसलिए सभी जीवधारियों की अवश्यक एकता में विश्वास करता हूँ।"[5]

इन समस्त परिभाषाओं के आधार पर 'मानवतावाद' वह विचार-प्रणाली है जिसका उद्देश मनुष्य-मनुष्य के बीच की खाई को हमेशा के लिए दूर करना है। यह विचार प्रणाली जीवन में मनुष्य को मनुष्य की तरह जीना सिखाती है। यह सीमित न रहकर समस्त प्राणी जगत के प्रति संवेदना, सहानुभूति और सहयोग व्यवहार करने की दृष्टि प्रदान करती है।

आधुनिक युग में मानवतावाद, धर्म के क्षेत्र में दर्शन, राजनीति के क्षेत्र में विचार प्रवाह, समाज के क्षेत्र में सिद्धांत तो साहित्य में आदर्श चिंतन प्रणाली के रूप में सामने आया है। मानवतावाद के अर्थ की सर्वोच्च फलश्रुति यह है कि, एक व्यक्ति से लेकर समाज और समस्त विश्व की मंगल कामना करना, दीन, दलित, दुर्बलों की पीड़ा को अपनी पीड़ा समझना। इस संकल्पना को मानव तक सीमित दायरें में न रखकर समस्त प्राणी-जगत के प्रति मानवतावादी व्यवहार करना, यह मानवतावाद का मूल उद्देश्य है। मानवतावादी साहित्यद्वारा भी विश्वबंधुत्व, कल्याण, समता, एकता, सर्वभूमहीत ही भावना को ही प्रगट किया जा रहा है। इन तत्वों पर खरा उतरनेवाला साहित्य ही मानवतावादी साहित्य है।

धूमिल की काव्य में मानवतावादी का स्वर **:**

आधुनिक समाज में शोषक और शोषित यह दों वर्ग निरंतर बने रहे। शोषक वर्ग हर सम्भव यह कोशिश करता रहा कि, शोषित वर्ग हरदम हमारी मुट्ठी में रहे। इसलिए मानवतावादी विचार-प्रणाली वर्तमान के संघर्षपूर्ण जीवन में मनुष्य को मानवतावादी दृष्टिकोण देती है। 'मानवतावाद' तथा 'मानववाद' में कई विचारक भेद मानते है, लेकिन हिंदी साहित्य में प्राय: 'मानववाद' तथा 'मानवतावाद' एक ही अर्थ में प्रयुक्त होते है। इसी आधार पर 'धूमिल' के कविताओं में किस तरह 'मानवतावादी' स्वर उभर कर आया है उसी पर इस प्र-पत्र में प्रकाश डाला जा रहा है। धूमिल की कविताओं में मानवतावादी चेतना का स्वर उभरा है उनमें हम यह देखते है कि उनकी कविता आम जनता के पक्ष में खड़ी होकर व्यवस्था के अमानवीय चेहरे को प्रस्तुत करती है। उनकी कविताओं का लक्ष्य मानव-मूल्यों को गहराई तक पहुँचकर उसे स्थापित करने का प्रयत्न किया गया है। इस संबंध में डॉ. वी. कृष्ण कहते है, "ऐसे ही युवा कवियों में धूमिल अग्रणी है। जो वर्तमान पूँजीवादी व्यवस्था में त्रस्त मानव-मूल्यों की लिए आवाज उठाते है। उनकी कविता पूँजीवादी मूल्यों के नाश कि दिशा में पहल करती हैं।"[6] धूमिल की कविताओं में मानवतावाद का मूल्य विद्यमान है। इसलिए इन्हें मानवतावादी कवि कहा जा सकता है। क्योंकि इनकी कविताओं में सर्वहारा वर्ग जैसे की शोषितों, पीड़ितों, मजदूरों, किसानों, श्रमिकों, हिंसा, नारी के प्रति विद्रोही स्वर देखने को मिलता है, वे अन्याय के विरूद्ध में अपनी लेखनी चलाते है। इनका समग्र काव्य-सृजन इसी का जीता-जागता दस्तावेज माना जा सकता है।

आजादी के पश्चात का साहित्य शोषक और शोषित इन दो वर्गो के संघर्ष का साहित्य है। इस काल के साहित्यकारों ने सर्वहारा वर्ग के पक्ष से लेकर शोषकों के विरूद्ध अपनी लेखनी चलाई है। साठोत्तरी साहित्य तो समकालीन परिस्थितियों का यथार्थवत लेखा-जोखा ही कहलाता है। इन कवियों ने मानवतावादी दृष्टिकोण को केद्र में रखकर ही अपना काव्य-सृजन किया। 'धूमिल' भी साठोत्तरी पीढ़ी के कवियों में से एक प्रमुख कवि माने जाते है। उनकी कविताओं में संपूर्ण विश्व के लिए मानवतावादी चेतना दृष्टिगोचर होती है। उन्होंने अपनी कविताओं में गाँव के किसानों से लेकर शहर के मजदूर तक का वास्तविक चित्र खिंचते हुए उनके साथ अपनी मानवीय संवेदना व्यक्त की है। जिसका जिता-जागता प्रमाण उनकी निम्न कविताओं में देखने को मिलता है।

(1) सर्वहारा वर्ग के प्रति मानवतावादी स्वर :

साठोत्तरी कविताओं में केवल परिवर्तन की बात नहीं कही गई उसका समाधान और उपाय भी सुझाये गए। सदियों से शोषित-पीड़ित समाज के इस वर्ग को उठकर खड़ा होने की, अपना अस्तित्व और अधिकारों को पहचानने को कहे गये है। धूमिल इस कविता की पंक्तियों में इस वर्ग को उठने के लिए आग्रह किया है। वे कहते है –

"इसलिए मैं फिर कहता हूँ कि हर हाथ में
गिली मिट्टी की तरह हाँ-हाँ मत करो
तनो
अकड़ो
अमरबेली की तरह मत जिओ
जड़ पकड़ो।" [7]

कवि चाहता है कि सर्वहारा अपनी शक्ति और अधिकार जाने। इसलिए उन्हें खुद उठ खड़े होने को कहते है। वरना हमेशा इन पूंजीपतियों पर निर्भर रहना पड़ेगा। जो अपने विचारों, अधिकारों से नहीं जी सकता वह अमरबेलि की तरह होता है। क्योंकि अमरबेलि की कभी जड़ नहीं पकड़ती वह अन्य वनस्पतियों पर जीवीत रहती है। इसलिए अपने अस्तित्व को मत गंवाओं उसे बनाए रखने की बात कहकर जड़ पकड़ने की बात करते है। सर्वहारा को उनकी शक्ति की अनुभूति कराने के लिए की वह अपनी शक्ति के उपयोग से किस तरह परिवर्तन या बदलाव ला सकता है। वे कहते है –

"तुम्हारे नाखून बहुत छोटे हैं और होने के बाद भी
तुम पशु बनने को तयार नहीं हो।

तुम्हारे चेहरे से आज भी आदमीयत की गंध आती है।" [8]

यहाँ धूमिलजी सर्वहारा वर्ग को आदमीयता की गंध आने से तात्पर्य है की यह वर्ग भी इंसान/ आदमी/ मानव की पहचान है। इसलिए इस वर्ग को चूप नहीं रहना चाहिए अन्याय का विरोध करना चाहिए। जिससे इस वर्ग को भी मानव होने का सम्मान, अधिकार प्राप्त हों।

'यह मेरा देश है' कविता में धूमिलजी संपूर्ण भारतवर्ष का चित्रण करते है –

"हिमालय से लेकर हिंद महासागर तक
फैला हुआ
जली हुई मिट्टी का ढेर है
जहाँ हर तीसरी जुबान का मतलब
नफरत है।
साजिश है।
अन्धेर है।
यह मेरा देश हैं।" [9]

धूमिल केवल गांव, कस्बो तक ही सीमित न होकर संपूर्ण भारत भर के आम आदमी की व्यथा को दर्शाते नज़र आते है। जहाँ देश का हर वह सामान्य इंसान जिसकी जिन्दगी नर्क से भी बत्तर बनी हुई है। ग्रामिण जीवन से लेकर शहरी जीवन तक नीरस सा है - निर्धन, बेकार, कुंठाओं से भरा हुआ लाचार, बेबस, शहरी आम इंसान चुपचाप सबकुछ सह रहा है। जैसे की वे कहते है –

"दुख होता है अगर किसी की
मिली नौकरी छुट गई हो
लेकिन उतना नहीं
कि जितना
बार-बार सुनने पर भी फटकार
आदमी, लौट काम पर
फिर आया हो
कालर फटी कमीज़ पहनकर।" [10]

ग्रामीण लोग तो अशिक्षित, सीधे-साधे लोग होते है, अन्याय सह जाते है परंतु शहरी लोगों की मानसिक संवेदना भी जैसे नष्ट हो चुकी हों। वह आदमी भी महज जीने के लिए जैसे-तैसे जी रहे हों। धूमिल गांव

के किसानों के साथ-साथ शहरी आदमी भी कैसे साधनहीन जीवन जी रहा है उसे भी बदलने की प्रेरणा देते है। जिसका सशक्त चित्रण उनकी कविता 'कल सुनना मुझे' में हुआ है। जिसमें मानवतावादी स्वर संपूर्ण भारतवर्ष में उभरा है।

(2) शोषितों का विरोध : मानवतावाद का मूल आधार शोषक और शोषित वर्ग के बीच की खाई को दूर करना ही है। एक मानव जब तक दूसरों मानव के दु:ख दर्दों को नहीं समझ पाता तब तक मानवतावाद की संकल्पना सही अर्थों में सिद्ध नहीं हो सकती। धूमिल की कविताओं का भी मूल आधार 'मानवता' होने के कारण वह पूँजीपतियों और राजनेताओं से टकराकर एक शोषणमुक्त समाज की कामना करते नज़र आते है। इस संबंध में डॉ. वी. कृष्ण लिखते है, "धूमिल एक ठोस सैद्धांतिक धरातल पर खड़े होकर इस अव्यवस्था की अमानवता के प्रति विद्रोह का स्वर देते है। उनकी नज़र में वर्तमान व्यवस्था का ढांचा एक साजिश है। उसमें मामुली आदमी के लिए कोई जगह नहीं है। इस व्यवस्था की जड़ों को उखाड़ फेंकने के लिए वह विचारधारा के माध्यम से संघर्ष करते है।"[11]

धूमिल ने मानवी मूल्यों को स्थापित करने के लिए तथाकथित पूँजीपतियों और राजनेताओं को अपनी अनोखी शैली में ललकारा है। उनका उद्देश्य केवल यह था की ऐसी व्यवस्था का निर्माण हो जिसमें छोटे बड़े का भेदभाव न होकर मानव, मानव बन कर रहे, सबको समान अधिकार मिले। कविने जब आम आदमी की मेहनत और पूँजीपतियों की मेहनत की तुलना की। जिसमें उन्हें मेहनत करता हुआ तो आम किसान और मजदूर नज़र आया परंतु पूँजी उसके पास नहीं बल्कि वह बनिये के पास दिखाई देती है। वे कहते हैं –

"आओ अचरज वहाँ पड़ा है, उसमे
जहाँ बनिये की आँख बनैले जानवर
सी जल रही है।" [12]

जानवर की दृष्टि जिस तरह दूसरे की रोटी पर होती है, वैसे ही इन पूँजीपतियों की दृष्टि भी आम सर्वहारा वर्ग की रोटी पर होती है। वह 'रोटी और संसद' इस कविता के माध्यम से इस दशा का सशक्त चित्रण करते है –

"एक आदमी रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है
वह सिर्फ रोटी से खेलता है

मैं पूछता हूँ
यह तीसरा आदमी कौन हैं?
मेरे देश की संसद मौन है।" [13]

इस कविता के माध्यम से धूमिल ने आम आदमीके रोटी के प्रश्न को उठाया है। आर्थिक विषमता के कारण पूँजीपति लोग आम 'आदमी की कमाई को हज़म कर जाते है और डकार तक नहीं लेते' जैसे कहावत यहाँ लागू होती है। रोटी से खेलनेवाला वह तीसरा आदमी कौन है ? इस बारें में संसद मौन है इस बात का सूचक है कि वह तीसरा आदमी संसद में बैठा राजनेता है। रोटी बेलनेवाला अर्थात इस देश को बनाने या चलाने वाला आम आदमी देश में मिलने वाली सभी सुख-सुविधाओं से कोसों दूर हैं। इतना ही नहीं यह स्वार्थीपरक और सियार से भी चालाक नेता लोग जनता की कमजोरी को जान गए है। जिसके कारण उन्हें आम जनता को ठगने के कई उपाय मिल गए है। ये लोग आम जनता की भावनाओं से खिलवाड करते है। उनका ध्यान अपनी काली करतूतों से हटाने के लिए दूसरी ओर जनता का ध्यान आकृष्ट करते नज़र आते है। जैसे के –

"उन्होंने सुरक्षित कर दिये है
तुम्हारे सन्तोष के लिए
पड़ोसी देशों की।
भुखमरी के किस्से
तुम्हारे गुस्से के लिए
अखबार का आठवां कालम
और तुम्हारी ऊब के लिए
'वैष्णव जण तो तेण कहिये' की
नमकीन धुन
गरज यह कि तुम्हे पूरा जाम
करने का पूरा इन्तेजाम।" [14]

इस संदर्भ में डॉ. म. तु. अष्टेकर लिखते है, "धूमिल की दृष्टि में इस देश के सुराजिये नेता बड़े चालाक हैं। केवल चालाक कहने से काम नहीं बनता उन्हें काइयाँ कहना ठीक होगा। जनता की श्रमजिवियों की तारीफ करके ही वे चूप रहते तो भी कोई बात नहीं थी। इससे भी आगे बढ़कर उन्होंने साधारण जनता की नब्ज जान ली है और कई तरह के 'इंतेजामात' भी कर रखे है।"[15] इस तरह हम देखते है कि आम जनता का उनके प्रश्नों पर से ध्यान हटाने के लिए यह कितने नीचे गिर सकते हैं ओछी हरकते कर सकते है।

धूमिल की कविताओं में व्यक्त हुआ मानवतावादी दृष्टिकोन अपने देश तह ही सीमित नहीं था, धूमिल दुनिया में चल रहें मानवीय मूल्यों के दमन से अच्छी तरह परिचित थे, इसी कारण अनेक जगहों पर विश्व के अनेक संदर्भ उनकी कविताओं में दिखाई देते है। बड़े राष्ट्रों का छोटे राष्ट्रों द्वारा दमन यह मानवता के विरोध का कृत्य है इस बात को चित्रित करते नज़र आते है।

"मैं देख रहा हूँ एशिया में दायें हाथों की मक्कारी ने
विस्फोटक सुरंगे बिछादी है।
उत्तर-दक्षिण-पूरब-पश्चिम-कोरिया, वियतनाम,
पाकिस्तान, इसराईल और कई नाम
उसके चारों कोनों पर खूनी धब्बे चमक रहे है।" [16]

किस तरह अमरीका और रूस जैसे बड़े देश अपनी मक्कारी से एशिया के छोटे-छोटे देशों आपस में लड़ा रहे है, नफरत पैदा कर रहे है। वहीं हमारे भारत वर्ष में और विदेशों में भी मा. गांधीजी जैसे चमकते हुए नामों को सामने रखकर मानव मूल्यों की हत्या की जा रही है। जिस गांधी जैसे नेता ने अपना पूरा जीवन मानवतावाद के लिए समाप्त कर दिया आज उन्हीं के नाम की दुहाई देकर अपना-अपना राज-काज चलाने वाले राजनेता उन्हीं का नाम लेकर मानव-मूल्यों की हत्या करते नज़र आते है। कवि कहते है –

"उस मुहावरे को समझ गया हूँ
जो आजादी और गांधी के नाम पर चल रहा है
जिससे ना भूख मिट रही है, न मौसम बदल रहा है।" [17]

आज़ादी और गांधी का नाम लेकर नेताओं ने आम जनता को हमेशा ठगा ही है और शायद आगे भी ठगते रहेंगे। धूमिल अब वर्तमान पूँजीवादी व्यवस्था के स्थान पर वर्गहीन समाज की कल्पना करते है वह एक ऐसे समाज की कामना और स्थापना चाहते हैं जिसमें जीवन मूल्यों का, अधिकारों समानता का पालन हों।

"मैनें इंतेजार किया
अब कोई बच्चा
भूखा रहकर स्कूल नहीं जायेगा
अब कोई छत बारिश में नहीं टपकेगी।" [18]

धूमिल मानवतावादी स्वर उभारना चाहते है वह शोषणमुक्त समाज की मंगल कामना करते है और स्वार्थी नेताओं का भंडाफोड़ करना चाहते है तथा व्यापक अर्थ में मानवतावाद की भावना निहित करते है।

(3) हिंसा का विरोध :

धूमिल की कविताओं में हिंसा का विरोध देखने को मिलता है। उनका मानना है कि इस व्यवस्था में बुनियादी सुधार की आवश्यकता है। आज अपराधी बेझिझक अपराध कर रहे है और व्यवस्था के दोषों के कारण उनपर कारवाई नहीं हो रही है। कवि धूमिल दोषमुक्त व्यवस्था को बदलने की माँग करते। वे कहते है – "मुझे अपनी कविताओं के लिए/ दूसरे प्रजातंत्र की अवश्यकता है।"[19] व्यवस्था के दोषों के कारण आम जनता भयभीत और त्रस्त है, उसे अपने भविष्य को लेकर चिंता है। धूमिल मानवता के पक्ष में लड़ी जानेवाली हर लड़ाई का उन्होंने समर्थन किया है। वे अपने समाज का ऐसा निर्माण चाहते है जो स्वस्थ और सुख-शांतिपूर्ण हों। जहाँ केवल अमन का पैगाम हो। मानव मूल्यों को जहाँ कही उन्होंने टूटते देखा वहाँ अपने तीखे व्यंग्यद्वारा उस पर प्रहार भी करते है और कहते है –

"मैंने अहिंसा को
एम सत्तारूढ़ शब्द का गला काटते हुए देखा
मैंने ईमानदारी को अपनी चोर जेबें भरते देखा
मैंने विवेक को चापलूसों तलवे चाटते हुए देखा।" [20]

'लाचारी' भारतीय समाज को लगा हुए एक भयानक रोग है, जिसे हम आम जुबान में कहते है – 'मजबूरी का नाम गांधीजी।' बस यहीं आम जनता ने सिख लिया है वह स्वयम् की मजबूरी को ही अपना भाग्य समझ रहे हैं, तकदिर समझ रहें है पर ये नादान 'तत्बीर' को कब समझेंगे। अपने अधिकारों के लिए कब लड़ेगे, अपनी शक्ति को कब पहचानेगे। कवि को बस इसी बात का इंतेजार है कि वह समाज में एक वैचारिक क्रांति चाहता है, परिवर्तन चाहता है, समानता, एकता, सहिष्णूता चाहता है।

अंत में प्रेमचंद के इन वाक्य से प्र-पत्र का अंत करती हूँ - "दास्ता के साँचे में ढ़लकर मनुष्य अपना मनुष्यत्व खो बैठता है।" इसलिए इस दास्ता से मुक्त होना है और सही मायने में मानवता का स्वर जन-जन तक पहुँचाना हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. ऋग्वेद, पृ. 60/5
2. अर्थवेद, पृ. 3/30
3. गीता, पृ. 6/29
4. डॉ. देवेश ठाकुर – देवेश ठाकुर रचनावली भाग – 4, पृ. 206
5. धूमिल और उनका काव्य – डॉ नाजिम शेख, पृ. 90
6. वही, पृ. 111
7. धूमील – संसद से सड़क तक, पृ. 34
8. धूमील – कल सुनना मुझे, पृ. 46
9. धूमील – संसद से सड़क तक, पृ. 104
10. धूमील – कल सुनना मुझे, पृ. 76
11. डॉ. वी. कृष्ण – क्रातिदर्शी कवि धूमिल, पृ. 24
12. धूमील – कल सुनना मुझे, पृ. 72
13. धूमिल – रोटी और संसद, पृ.33
14. डॉ. ग. वु. अष्टेकर – कटघरे का कवि धूमिल, पृ. 97
15. वही, पृ. 91
16. धूमील – संसद से सड़क तक, पृ. 20
17. वही, पृ. 25
18. वही, पृ. 117
19. वही, पृ. 66
20. धूमील – संसद से सड़क तक, पृ. 56

डॉ. रज़िया शहेनाज़ शेख अब्दुल्ला

सहायक प्राध्यापिका तथा शोध निर्देशिका

बहिर्जी स्मारक महाविद्यालय, बसमतनगर

ता. बसमतनगर जि. हिंगोली (महाराष्ट्र) 431512

दूरभाष : +91 8888662341, 9850602786

email ID: drskraziya@gmail.com